कहानी

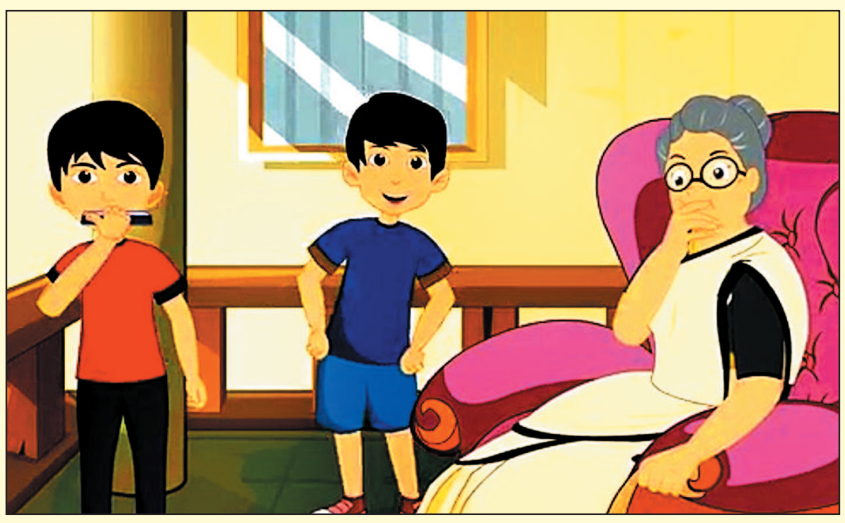

ईमानदारी का सबसे बड़ा इनाम

एक समय की बात है, एक छोटे से गांव में मोहन नाम का एक प्यारा सा लड़का रहता था. मोहन बहुत शरारती था, लेकिन उसका दिल बहुत साफ था. उसे अपने दादा-दादी के साथ समय बिताना बहुत पसंद था. हर रात खाना खाने के बाद वह अपने दादा-दादी के पास बैठ जाता और उनसे कहानी सुनाने की जिद करता. दादी भी मुस्कुराते हुए उसे गोद में बिठातीं और कहानियों की दुनिया में ले जातीं.

एक दिन दादी ने मोहन को एक खास कहानी सुनाई. उन्होंने कहा, 'बहुत साल पहले इसी गांव में एक किसान रहता था, जिसका नाम रामू था. रामू बहुत मेहनती था, लेकिन उसके पास ज्यादा धन नहीं था. वह रोज सुबह जल्दी उठता, खेतों में काम करता और शाम को थका-हारा घर लौटता. उसके पास एक छोटा सा खेत था, जिससे वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था.

मोहन ध्यान से कहानी सुन रहा था. दादी ने आगे बताया, 'एक दिन रामू को अपने खेत में एक पुराना घड़ा मिला. जब उसने घड़े को खोला, तो उसमें सोने के सिक्के भरे हुए थे. रामू बहुत खुश हुआ, लेकिन तभी उसके मन में एक सवाल आया—क्या ये घड़ा उसका है या किसी और का? '

मोहन ने तुरंत पूछा, 'दादी, फिर रामू ने क्या किया? क्या उसने सारे सिक्के रख लिए?' दादी मुस्कुराईं और बोलीं, 'यही तो इस कहानी की खास बात है. रामू के पास मौका था कि वह उन सिक्कों को रख ले, लेकिन उसने ईमानदारी का रास्ता चुना. वह घड़ा लेकर गांव के मुखिया के पास गया और सारी बात बता दी. '

मुखिया ने गांव के सभी लोगों को बुलाया और पूछा कि क्या किसी का यह घड़ा खोया है. बहुत खोजबीन के बाद पता चला कि वह घड़ा गांव के एक बूढ़े आदमी का था, जो कई साल पहले उसे खेत में छुपाकर भूल गया था. बूढ़ा आदमी बहुत गरीब था और जब उसे अपने सिक्के वापस मिले, तो उसकी आंखों में खुशी के आंसू आ गए.

मोहन की आंखें चमक उठीं. उसने पूछा, 'दादी, फिर रामू को क्या मिला?' दादी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, 'बेटा, रामू को सबसे बड़ी चीज मिली—सबका विश्वास और सम्मान. गांव के लोग उसकी ईमानदारी से इतने खुश हुए कि उन्होंने मिलकर उसकी मदद की और उसका जीवन पहले से बेहतर हो गया. '

मोहन थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला, 'दादी, अगर मैं होता तो शायद मैं भी पहले सोचता कि सिक्के रख लूं.' दादी ने हंसते हुए कहा, 'सोचना गलत नहीं है, बेटा, लेकिन सही फैसला लेना ही असली बात होती है. ईमानदारी हमेशा अंत में जीतती है. '

उस रात मोहन ने दादी की बात अपने दिल में बसा ली. अगले दिन जब वह स्कूल जा रहा था, तो रास्ते में उसे एक पर्स मिला. उसने पर्स खोला, तो उसमें पैसे और कुछ जरूरी कागजात थे. पहले तो उसके मन में आया कि वह पैसे रख ले, लेकिन तभी उसे दादी की कहानी याद आ गई.

मोहन सीधे स्कूल नहीं गया, बल्कि पर्स लेकर प्रधानाचार्य के पास पहुंच गया और उन्हें सारी बात बता दी. प्रधानाचार्य ने पर्स के मालिक को बुलाया, जो एक गरीब मजदूर था. अपना पर्स वापस पाकर वह बहुत खुश हुआ और उसने मोहन को ढेर सारी दुआएं दीं.

स्कूल में भी मोहन की बहुत तारीफ हुई. सभी बच्चों और शिक्षकों ने उसकी ईमानदारी की सराहना की. उस दिन मोहन को समझ में आ गया कि दादी की कहानी सिर्फ कहानी नहीं थी, बल्कि जीवन का एक सच्चा सबक थी.

शाम को जब वह घर लौटा, तो दौड़कर दादी के पास गया और उन्हें सारी बात बताई. दादी ने उसे गले लगा लिया और कहा, 'देखा बेटा, ईमानदारी का फल हमेशा मीठा होता है. '

उस दिन के बाद मोहन ने तय कर लिया कि वह हमेशा सच और ईमानदारी का साथ देगा, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो. और वह हर रात दादी से नई कहानी सुनने की जिद जरूर करता, क्योंकि अब उसे पता चल गया था कि हर कहानी में एक अनमोल सीख छुपी होती है.

सीख

ईमानदारी और सच्चाई हमेशा इंसान को सम्मान और खुशियां दिलाती हैं.

बिंदु मिलाओ

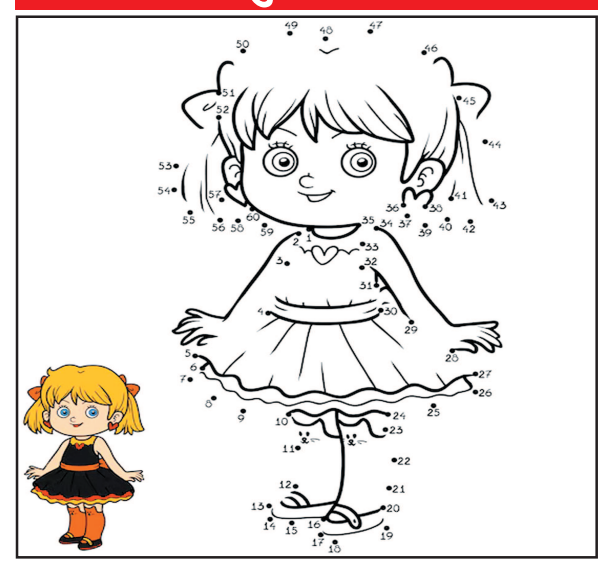

रंग भरो

प्रेरक प्रसंग

तीन नेताओं ने बदली आजादी की राह

'स्वराज' यानी पूर्ण स्वतंत्रता की मांग को जन-जन तक पहुंचाया. उस समय जब कई नेता अंग्रेजों से सुधारों की उम्मीद कर रहे थे, लाल-बाल-पाल ने साफ कहा कि आजादी भीख में नहीं, संघर्ष से मिलेगी.

'लाल-बाल-पाल' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के तीन महान नेताओं—लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल—का समूह था, जिन्होंने देश में राष्ट्रवाद की अलख जगाने और अंग्रेजों के खिलाफ जनजागरण करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई. ये तीनों नेता उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रतीक थे और इन्होंने बाल गंगाधर तिलक ने 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा' का नारा देकर पूरे देश में क्रांति की भावना पैदा कर दी. उन्होंने गणेश उत्सव और शिवाजी उत्सव जैसे सार्वजनिक आयोजनों के माध्यम से लोगों में

एकता और देशभक्ति की भावना को मजबूत किया. उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता रहस्य' ने युवाओं को कर्म और कर्तव्य के प्रति जागरूक किया. वहीं लाला लाजपत राय, जिन्हें 'पंजाब केसरी' कहा जाता है, ने देशभर में शिक्षा और समाज सुधार के कार्यों को बढ़ावा दिया. उन्होंने 'अनहैप्पी इंडिया' जैसी पुस्तकों के माध्यम से अंग्रेजों की नीतियों की आलोचना की और भारतीयों को अपने अधिकारों के लिए खड़े होने की प्रेरणा दी.

बिपिन चंद्र पाल ने अपने भाषणों और लेखों के जरिए लोगों में जागरूकता फैलाने का काम किया. वे एक प्रभावशाली वक्ता और पत्रकार थे, जिन्होंने 'न्यू इंडिया' और 'वंदे मातरम्' जैसे पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को मजबूत किया. उन्होंने स्वदेशी आंदोलन का जोरदार समर्थन किया और लोगों से विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने की अपील की. लाल-बाल-पाल की इस तिकड़ी ने मिलकर बंगाल विभाजन (1905) के विरोध में आंदोलन को तेज किया और देशभर में स्वदेशी और बहिष्कार की लहर पैदा कर दी.

इन तीनों नेताओं की सबसे बड़ी देन यह थी कि इन्होंने भारतीयों के मन में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास जगाया. इन्होंने युवाओं को यह सिखाया कि देश के लिए संघर्ष करना सबसे बड़ा कर्तव्य है. इनके विचारों और कार्यों ने आगे चलकर महात्मा गांधी और अन्य नेताओं को भी प्रेरित किया. लाल-बाल-पाल ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी, जिसमें सिर्फ याचना नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प और संघर्ष की भावना थी. आज भी उनकी सीख हमें यह प्रेरणा देती है कि अगर इरादे मजबूत हों, तो किसी भी अन्याय के खिलाफ खड़ा हुआ जा सकता है और सच्चाई के रास्ते पर चलकर देश और समाज के लिए बड़ा बदलाव लाया जा सकता है.

जानकारी

तकनीक से जुड़ी नई क्रांति

इंटरनेट आज के समय में हमारी जिंदगी का एक बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है. यह एक वैश्विक नेटवर्क है, जो दुनिया भर के कंप्यूटरों, मोबाइल फोन और अन्य डिजिटल उपकरणों को आपस में जोड़ता है. इंटरनेट की मदद से हम कुछ ही सेकंड में दुनिया के किसी भी कोने से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, चाहे वह शिक्षा से जुड़ी हो, मनोरंजन से या फिर व्यापार से संबंधित.

इंटरनेट की शुरुआत 1960 के दशक में एक सैन्य परियोजना के रूप में हुई थी, जिसे बाद में आम लोगों के उपयोग के लिए विकसित किया गया. धीरे-धीरे यह तकनीक इतनी विकसित हो गई कि आज यह हर व्यक्ति के हाथ में स्मार्टफोन के

रूप में मौजूद है. इंटरनेट का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह जानकारी का असीमित भंडार प्रदान करता है. छात्र ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते हैं, शिक्षक डिजिटल माध्यम से पढ़ा सकते हैं और लोग घर बैठे ही नए कौशल सीख सकते हैं.

इंटरनेट ने संचार के तरीके को भी पूरी तरह बदल दिया है. पहले जहां लोगों को एक-दूसरे तक संदेश पहुंचाने में कई दिन लग जाते थे, वहीं अब ईमेल, सोशल मीडिया और वीडियो कॉल के माध्यम से हम तुरंत बात कर सकते हैं. इसके अलावा, इंटरनेट ने व्यापार और बैंकिंग को भी आसान बना दिया है. लोग ऑनलाइन शॉपिंग कर सकते हैं, पैसे ट्रांसफर कर सकते हैं और घर बैठे बिलों का भुगतान कर सकते हैं.

हालांकि इंटरनेट के कई फायदे हैं, लेकिन इसके कुछ नुकसान भी हैं. इसका अधिक उपयोग लोगों को लत की ओर ले जा सकता है, जिससे समय की बर्बादी होती है. इसके अलावा, साइबर अपराध, फेक न्यूज़ और निजी जानकारी की चोरी जैसे खतरे भी बढ़ गए हैं. इसलिए इंटरनेट का उपयोग सोच-समझकर और सुरक्षित तरीके से करना जरूरी है.

भूल भुलैया

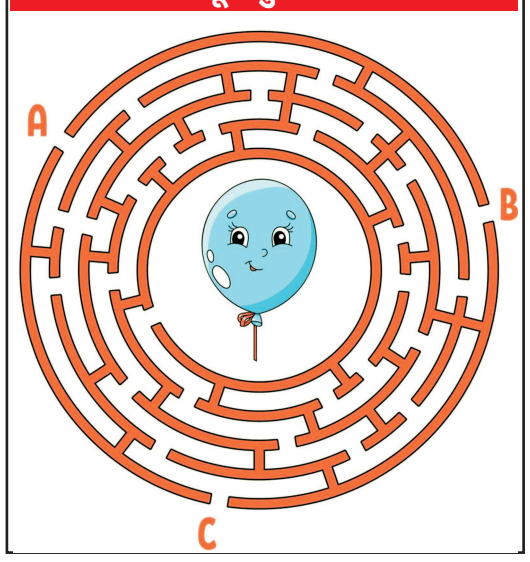

रोचक तथ्य

- एक प्लास्टिक बोतल को पूरी तरह गलने में 400-1000 साल लग सकते हैं.
- दुनिया में हर मिनट लगभग 10 लाख प्लास्टिक बोतलें खरीदी जाती हैं.
- अधिकांश प्लास्टिक बोतलें सिर्फ एक बार इस्तेमाल के बाद फेंक दी जाती हैं.
- प्लास्टिक बोतलें पेट्रोलियम (कच्चे तेल) से बनाई जाती हैं.
- केवल लगभग 9% प्लास्टिक ही रीसायकल हो पाता है.
- प्लास्टिक बोतलें समुद्र में जाकर समुद्री जीवों के लिए खतरा बनती हैं.
- गर्मी में प्लास्टिक बोतल से हानिकारक रसायन निकल सकते हैं.
- एक प्लास्टिक बोतल को रीसायकल करके कपड़े (पॉलिएस्टर) भी बनाए जा सकते हैं.
- हर साल करोड़ों टन प्लास्टिक कचरा धरती और समुद्र में जमा होता है.

अगर हर व्यक्ति रोज एक बोतल कम इस्तेमाल करे, तो पर्यावरण पर बड़ा असर पड़ सकता है.

छोटी बोतल, बड़ा खतरा

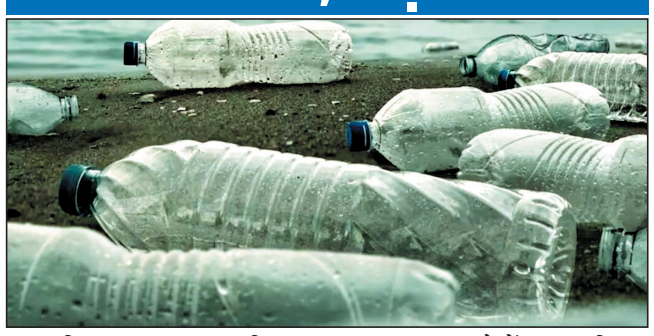

कविता

सपनों की उड़ान

सुबह की किरणें जब धरती को जगाती हैं,
चिड़ियों की चहचहाहट खुशियाँ ले आती हैं.
हवा का हर झोंका कुछ कहता जाता है,
जीवन हर पल नया संदेश सुनाता है.

मेहनत की राह पर जो चलते जाते हैं,
सपनों को सच में वही बदल पाते हैं.
हिम्मत और विश्वास जो साथ निभाते हैं,
वो ही जिंदगी में ऊँचाइयाँ पाते हैं.

बूझो तो जानें

- ऐसा क्या है जो जितना सुखाओ, उतना गीला होता है?

उत्तर- तौलिया

- ऐसा कौन है जो बिना पैर के चलता है?

उत्तर- नदी

- ऐसी कौन सी चीज है जो टूटती है पर आवाज नहीं करती?

उत्तर- नींद

- एक आंख है, पर देख नहीं सकती—क्या है?

उत्तर- सुई

- ऐसा क्या है जो पानी में गिरते ही गीला नहीं होता?

उत्तर- परछाई

- बिना पंख के उड़ती, बिना मुंह के बोलती—क्या है?

उत्तर-हवा

- ऐसा क्या है जिसे हम खाते हैं और पीते भी हैं?

उत्तर-नारियल

हंसी-ठिठोली

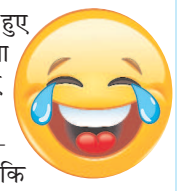

- अध्यापक ने पढ़ाते हुए प्रश्न पूछा - कौन-सा हाथ लिखने के लिए सबसे अच्छा होता है?
  एक छात्र ने उत्तर दिया - कोई सा भी नहीं, क्योंकि हम पेन से लिखते हैं.
- अध्यापक - बच्चों बताओ, गणित की किताब देखकर अक्सर सब लोग मायूस क्यों हो जाते हैं?
  छात्र - क्योंकि, इसमें किसी भी सवाल का हल नहीं होता है.
- मास्टर जी- खुशी का ठिकाना न रहा कोई इस मुहावरे का अर्थ बताओ?
  चिंटू - खुशी घर वालों से छिपकर, हर रोज अपने दोस्त से मिलने जाती थी.
  फिर एक दिन उसके पापा ने उसे देख लिया और खुशी को घर से निकाल दिया.
  अब बेचारी खुशी का ठिकाना न रहा.
  यह जवाब सुनकर मास्टर जी अभी तक बेहोश ही हैं.

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें .

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें .

उत्तर- 1. सूरज की किरणें, 2. हवाई जहाज का चक्का , 3. हवाई जहाज के पंखे की पीली पट्टी, 4. हवाई जहाज के पीछे के दिवा के रंग में अंतर, 5. हवाई जहाज का आगे का हिस्सा आकार में थोड़ा अलग